आधुनिकता के आधार पर सूरजमुखी की खेती

राजीव कुमार[1], संजीव कुमार यादव[2] एवं प्रदीप कुमार[3]

[1]संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा–281 401, उत्तर प्रदेश, भारत

[2]बीज विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज– 224 229, अयोध्या, भारत

[3]सस्य विज्ञान विभाग, वीर कुंवर सिंह कृषि महाविद्यालय, डुमराव–802 119, बक्सर, बिहार, भारत

ईमेलः sanju4432nduat@gmail.com

भारत में सूरजमुखी को खरीफ, रबी और जायद तीनों मौसम में उगाया जा सकता है, लेकिन जायद मौसम में इसकी खेती अधिक फायदेमंद होती है। सूरजमुखी का पौधा शीघ्र पकने वाला, सूखा सहन करने वाला तथा तापमान एवं प्रकाश के प्रति असंवेदनशील होता है। जायद के मौसम में मधुमक्खियों की पर्याप्त उपस्थिति इसकी पैदावार में वृद्धि और बीजों में अधिक तेल प्राप्त करने में सहायक होती है। सूरजमुखी की खेती के लिए दोमट मिट्टी सर्वोत्तम है और खेत की अच्छी तैयारी, सही समय पर बुवाई, उचित बीज की मात्रा, खाद एवं उर्वरक प्रबंधन, निराई–गुड़ाई और सिंचाई इसके उत्पादन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सूरजमुखी की बुवाई का सही समय फरवरी का दूसरा पखवाड़ा है। बीज की मात्रा संकुल प्रजातियों में 12–15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर और संकर प्रजातियों में 5–6 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होनी चाहिए। सूरजमुखी की फसल की कटाई फूलछत्ता के पीला पड़ने पर की जाती है और बीज को अच्छी तरह सुखाकर भंडारण किया जाता है। बीजों से 3 महीने के अंदर तेल निकाल लेना चाहिए ताकि तेल में कड़वाहट न आए। सूरजमुखी की खेती उत्तरी भारत के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प है, जो किसानों को उच्च उत्पादन और अच्छा लाभ प्रदान कर सकती है।

परिचय

हमारे देश में सूरजमुखी बेहद कारगर तिलहन फसल मानी जाती है। यह भारत में 1969–70 में हुई खाद्य तेल की कमी के बाद उगाई जाने लगी है। सूरजमुखी का तिलहनी फसलों में खास स्थान है। सूरजमुखी एक सदाबहार फसल है, जिसके फूल और बीज दोनों ही अनेक उपयोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं। सूरजमुखी की खेती खरीफ, रबी एवं जायद तीनों ही मौसम में की जा सकती है। लेकिन खरीफ में इस पर अनेक रोगों एवं कीटों का प्रकोप होने के कारण फूल छोटे होते हैं तथा दाना कम पड़ता है। जायद में सूरजमुखी की अच्छी उपज प्राप्त होती है। इस कारण जायद में ही इसकी खेती ज्यादातर की जाती है। सूरजमुखी शीघ्र पकने वाली फसल है। यह सूखा को सहन कर सकती है तथा तापमान एवं प्रकाश के प्रति असंवेदनशील है। लेकिन उत्तरी भारत के लिए सबसे सही मौसम जायद का है क्योंकि इस मौसम में मधुमक्खी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती है जो इसकी पैदावार के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। फूल आने के समय मधुमक्खियाँ प्राकृतिक रूप से बहुत सक्रिय होती हैं व परागण में बहुत सहायक होती हैं। इससे पूरे फूल में दाना भरता है व पैदावार में वृद्धि तथा बीजों से अधिक तेल प्राप्त होता है।

जलवायु और भूमि

सूरजमुखी की खेती खरीफ, रबी, जायद तीनों मौसम में की जा सकती है। अधिक तापमान में बीजों का अंकुरण सही से नहीं हो पाता। पौधों के विकास के लिए सामान्य तापमान और फसल पकते समय शुष्क जलवायु की अति आवश्यकता पड़ती है। सूरजमुखी की खेती अम्लीय एवं क्षारीय भूमि को छोड़कर सिंचित दशा वाली सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है, लेकिन दोमट भूमि सर्वोतम मानी जाती है।

किस्में

इसमें मख्य रूप से दो प्रकार की किस्में पायी जाती हैं। एक तो सामान्य या संकुल किस्में इसमें मार्डन, सूर्या, ज्वालामुखी, एम.एस.एफ.एच–4 पायी जाती है। दूसरी संकर किस्में इसमें के.बी.एस.एच–1, एस. एच.–3322, एफ.एस.एच–17 एवं कावेरी–618 पाई जाती है।

खेत की तैयारी

सूरजमुखी की खेती के लिए पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करके खेत को खुला छोड़ दें ताकि खेत में मौजूद खरपतवार और कीट नष्ट हो जाएं। खेत की तैयारी में जायद के मौसम में पर्याप्त नमी न होने पर खेत को पलेवा करके जुताई करनी चाहिए। खेत की मिट्टी को भुरभुरा बनाने के लिए एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा बाद में 2 से 3 जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करनी चाहिए। जिससे कि नमी सुरक्षित बनी रह सके। भूमि में नमी बनाए रखने के लिए प्रत्येक जुताई के बाद पाटा अवश्य लगाऐं।

बुवाई का समय व विधि

जायद में सूरजमुखी की बुवाई का सर्वोत्तम समय फरवरी का दूसरा पखवारा है। इस समय बुवाई करने पर मई के अन्त तक अथवा जून के प्रथम सप्ताह तक फसल पक कर तैयार हो जाती है, यदि देर से बुवाई की जाती है तो पकने पर वर्षा शुरू हो जाती है और दानों का नुकसान हो जाता है। बुवाई पंक्ति में हल के पीछे 4 से 5 सेंटीमीटर गहराई पर करनी चाहिए। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सेंटीमीटर तथा पौध से पौध की दूरी 15 से 20 सेंटीमीटर रखनी चाहिए।

बीज की मात्रा

बीज की मात्रा संकुल या सामान्य किस्मों में 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज लगता है और संकर किस्मों में 5 से 6 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज लगता है। यदि बीज की जमाव गुणवत्ता 70 प्रतिशत से कम हो तो बीज की मात्रा बढ़ाकर बुवाई करना चाहिए, बीज को बुवाई से पहले 2 से 2.5 ग्राम थीरम प्रति किलोग्राम बीज को शोधित करना चाहिए। जायद के मौसम में बीज को बुवाई से पहले रात में 12 घंटा भिगोकर सुबह 3 से 4 घंटा छाया में सुखाकर सायं 3 बजे के बाद बुवाई करनी चाहिए। बीजोपचार किसी फफूँदनाशी जैसे कैप्टान, थिराम, बॉविस्टिन, कार्बेन्डाजिम आदि से अवश्य कर लें ताकि बीज जनित बीमारी न हो।

खाद एवं उर्वरक

खेत की प्रथम जुताई के समय 10 से 15 टन सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर खेत में डालें। मिट्टी की जांच के आधार पर ही उर्वरक दें अन्यथा आम सिफारिशों के आधार पर उर्वरकों की मात्रा देनी चाहिए। 24 किलोग्राम नत्रजन तथा 16 किलोग्राम फॉस्फोरस प्रति एकड़ उन्नत किस्मों एवं 40 किलोग्राम नत्रजन (90 किलोग्राम यूरिया) तथा 20 किलोग्राम फॉस्फोरस (125 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट) प्रति एकड़ संकर किस्म (हाइब्रिड) के लिए पर्याप्त है। पूरी फॉस्फोरस व आधी नत्रजन बुवाई के समय तथा शेष नत्रजन प्रथम सिंचाई पर डालें ।

निराई–गुड़ाई व सिंचाई

पहली सिंचाई बुवाई के 20 से 25 दिन बाद हल्की या स्प्रिंकलर से करनी चाहिए। बाद में आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। कुल 5 या 6 सिंचाइयों की आवश्यकता पड़ती है। फूल निकलते समय, दाना भरते समय बहुत हल्की सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद निराई–गुड़ाई करना अति आवश्यक है, इससे खरपतवार भी नियंत्रित होते हैं।

मिट्टी चढ़ाना

सूरजमुखी की फसल को गिरने से रोकने के लिए मिट्टी चढ़ाना चाहिए जब फसल की ऊंचाई 60–70 सेन्टीमीटर हो व फूल आने से पहले करनी चाहिए। पौधों पर 10 से 15 सेंटीमीटर ऊँची मिट्टी चढ़ाना अति आवश्यक है जिससे पौधे गिरते नहीं है।

कटाई एवं भंडारण

जब सूरजमुखी फूलछत्ता मुड़कर पीला पड़ जाये तो फसल कटाई के लिए तैयार है। छत्ता काटने के बाद उसे धूप में 5–6 दिन सुखा लेना चाहिए। सभी छत्ते एक बार में कटाई के लिए तैयार नहीं होते। अतः कुछ दिन का अन्तराल करके 2–3 बार में काटना चाहिए ताकि दाने का बिखराव नहीं हो। दाने को धूप में उस समय तक सुखाना ठीक रहता है जब तक कि नमी की मात्रा बीज में 5 प्रतिशत न हो जाये। बीज निकलने के बाद अच्छी तरह सुख लेना चाहिए बीज में 8 से 10 प्रतिशत से नमी आधिक नहीं रहनी चाहिए। बीजो से 3 महीने के अन्दर तेल निकाल लेना चाहिए अन्यथा तेल में कड़वाहट आ जाती है, अर्थात पारिस्थिकी के अंतर्गत भंडारण किया जा सकता है।

निष्कर्ष

सूरजमुखी की फसल खरीफ, रबी और जायद तीनों मौसमों में उगाई जा सकती है, लेकिन जायद के मौसम में इसकी खेती सबसे अधिक लाभदायक होती है। इसकी खेती के लिए दोमट मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है। खेत की तैयारी, सही समय पर बुवाई, उपयुक्त बीज की मात्रा, उर्वरक प्रबंधन, निराई–गुड़ाई और सिंचाई की उचित व्यवस्था आवश्यक है। फसल की कटाई तब की जाती है जब फूलछत्ता पीला पड़ जाए और बीजों को अच्छी तरह सुखाने के बाद भंडारण किया जाता है। सूरजमुखी की खेती में मधुमक्खियों का परागण में महत्वपूर्ण योगदान होता है, जिससे पैदावार में वृद्धि और बीजों में तेल की मात्रा बढ़ती है। नवीन किस्मों और उन्नत तकनीकों का उपयोग करके किसान सूरजमुखी की खेती से अच्छा लाभ कमा सकते हैं। इस प्रकार, सूरजमुखी एक महत्वपूर्ण फसल है जो किसानों को तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हो सकती है।